

Dr. Manoj Kumar Singh
Assistant Professor
P.G.Deptt.of Psychology
Maharaja Bahadur Ram Ran Vijay Prasad Singh college Ara
Date; 18/02/2026
Class: U.G Semester - 4th
(MJC-5)
Abnormal Psychology,
Topic -
Personality Dynamic's

व्यक्तित्व की गतिकी (Personality Dynamics) व्यक्तित्व की गतिकी का अर्थ है कि व्यक्तित्व में ऊर्जा का स्रोत क्या है? यह ऊर्जा कहाँ

से प्राप्त होती है एवं समय-समय पर व्यक्तित्व में किस प्रकार से परिवर्तन होते हैं। फ्रायड के अनुसार मानव जीव एक जटिल तन्त्र है जिसमें शारीरिक ऊर्जा तथा मानसिक ऊर्जा दोनों ही होते हैं। फ्रायड के अनुसार इन दोनों तरह की ऊर्जाओं का स्पर्श बिन्दु इंद्र या उपाहं होता है। चलना, दौड़ना, लिखना आदि कार्य करने में शारीरिक ऊर्जा एवं सोचना, तर्क करना, निर्णय लेना, समस्या का समाधान करना इत्यादि में मानसिक ऊर्जा काम में आती है। फ्रायड ने व्यक्तित्व के कुछ गत्यात्मक पहलू बताये हैं, जो निम्न हैं-

(1) मूलप्रवृत्तियाँ.

(2) चिन्ता तथा

(3) मनोरचनाएँ

(1) मूल प्रवृत्ति-मूल प्रवृत्ति का तात्पर्य उन शारीरिक उत्तेजनाओं से होता है जिनके द्वारा व्यक्ति के सभी तरह के व्यवहार निर्धारित होते हैं। फ्रायड ने इन मूल प्रवृत्तियों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया है-

(i) जीवनमूल प्रवृत्ति (इरोस) जीवन मूलप्रवृत्ति के कारण व्यक्ति की प्रवृत्ति रचनात्मक कार्यों में होती है। वह नये-नये अर्थात् मौलिक एवं अच्छे-अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित होता है। रचनात्मक कार्यों में मानव जाति का प्रजनन भी शामिल है।

(ii) मृत्यु मूल प्रवृत्ति (थैनाटोस) यौन मूलप्रवृत्ति ध्वंसात्मक कार्यों या आक्रमणकारी

व्यवहार से सम्बन्धित है। इस प्रवृत्ति के कारण हिंसात्मक एवं आक्रामक व्यवहार करता है। अर्थात् उसकी प्रवृत्ति विध्वंसात्मक कार्यों की ओर होती है। इसे यौन मूलप्रवृत्ति भी कहते हैं। अपने विशेष अहमियत के कारण फ्रायड ने जीवन मूल प्रवृत्ति से यौन मूलप्रवृत्ति को अलग करके वर्णन किया है। यौन मूल प्रवृत्ति के ऊर्जा बल को लिबिडो कहा गया है जिसकी अभिव्यक्ति केवल लैंगिक क्रियाओं के रूप में होती है। लिबिडो का अर्थ काम शक्ति होता है। फ्रायड ने अपने पूरे सिद्धांत में "यौन मूल प्रवृत्ति" पर सर्वाधिक बल दिया है। फ्रायड के अनुसार यौन ऊर्जा व्यक्तित्व विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

(2) चिन्ता-मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त में चिन्ता एक महत्वपूर्ण संप्रत्यय है तथा व्यक्तित्व का दूसरा गत्यात्मक पहलू है। इसका असामान्य व्यवहार की उत्पत्ति से सीधा एवं प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। फ्रायड के अनुसार

चिन्ता का अर्थ "एक दुःखद भावनात्मक अवस्था" से है। अतः यह एक ऐसी भावात्मक एवं दुःखद अवस्था होती है जो अहं को आलम्बित खतरे से सतर्क करता है ताकि व्यक्ति वातावरण के साथ अनुकूलित तरीके से व्यवहार कर सके तथा वह वातावरण के साथ समायोजन कर सके। फ्रायड ने चिन्ता के तीन प्रकार बतलाए हैं।

(1) वस्तुनिष्ठ या वास्तविक चिन्ता वास्तविक चिन्ता से अभिप्राय, "बाहरी वातावरण में विद्यमान वास्तविक खतरे के प्रति की गई सांवेगिक अनुक्रिया से है। यह चिन्ता इसलिए उत्पन्न होती है, क्योंकि अहं कुछ समय तक बाह्य वातावरण पर निर्भर होता है। उदाहरण के लिए भूकम्प, आँधी-तूफान, शेर आदि से भय उत्पन्न होकर चिन्तित होना वास्तविक चिन्ता के उदाहरण है।

(ii) तन्त्रिकातापी चिन्ता इस प्रकार की चिन्ता के उत्पन्न होने का कारण, अहं का उपाहं की इच्छाओं पर निर्भर होना है। उदाहरण के लिए व्यक्ति का यह सोचकर चिन्ताग्रस्त हो जाना कि क्या अहं, उपाहं की यौन इच्छाओं, आक्रामक एवं हिंसात्मक इच्छाओं को नियंत्रित करने में सक्षम हो पायेगा।

(iii) नैतिक चिन्ता अहं की पराहं पर निर्भरता के कारण व्यक्ति में नैतिक चिन्ता उत्पन्न होती है। अर्थात् जब अहं, उपाहं की अनैतिक इच्छाओं को कार्यरूप दे देता है, तो उसे पराहं से दण्डित होने की धमकी मिलती है। इससे वह नैतिक रूप से चिन्ताग्रस्त हो जाता है एवं उसमें दोषभाष, लज्जा आदि की भावना उत्पन्न हो जाती है।

यदि सामूहिक रूप से देखा जाए तो ये तीनों चिन्ताएँ एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं एवं एक प्रकार की चिन्ता दूसरे प्रकार की चिन्ता को जन्म देती हैं।

(3) मनोरचनाएँ या रक्षाप्रक्रम-जब व्यक्ति के भीतर अनेक प्रकार की चिन्ताएँ उत्पन्न होने लगती हैं तो वह इन चिन्ताओं से छुटकारा पाने के लिए अनेक रक्षात्मक प्रक्रमों की रचना करता है। प्रायः अहं कुछ तर्कसंगत उपायों के माध्यम से इन चिन्ताओं से स्वयं को बचा लेता है परन्तु हमेशा ऐसा सम्भव नहीं हो पाता है और तब ऐसी स्थिति में कुछ अतर्क संगत उपायों को अपनाकर वह चिन्ता को दूर करता है। ऐसे अतर्क संगत उपायों को फ्रायड ने रक्षा प्रक्रम की संज्ञा दी है। ऐसे रक्षा प्रक्रम अचेतन स्तर पर कार्य करते हुए वास्तविकता को विकृत करके व्यक्ति में चिन्ता के स्तर को कम कर देता है। फ्रायड के अनुसार दमन सबसे महत्वपूर्ण रक्षा प्रक्रम है। इसके अलावा प्रक्षेपण, विस्थापन, प्रतिक्रिया निर्माण, यौक्तिकीकरण, प्रतिगमन आदि प्रमुख हैं। वैसे तो अहं रक्षात्मक प्रक्रम के विचार का प्रतिपादन सिगमण्ड फ्रायड ने किया परन्तु इसकी सूची उनकी पुत्री अन्ना फ्रायड तथा अन्य नव फ्रायडियन मनोवैज्ञानिकों ने तैयार की। यह प्रक्रम अहं को चिन्ताओं से बचा पाता है। रक्षात्मक प्रक्रमों का प्रयोग सभी व्यक्ति करते हैं। एक सीमा तक इन रक्षात्मक प्रक्रमों का प्रयोग करना ठीक है, किन्तु इनके लगातार तथा अधिक प्रयोग के कारण व्यक्ति के मन में अनेक प्रकार के मनोरोग जन्म लेने लगते हैं। अर्थात् इसके अधिक प्रयोग से व्यक्ति के व्यवहार में बाह्यता एवं स्नायुविकृति का गुण विकसित हो जाता है।